मृदुला गर्ग के उपन्यास चितकोबरा व कठगुलाब में नारी-विमर्श

Seema*

M.A. B. Ed. Lecturer of Hindi, Singh Ram Memorial Senior Secondary School, Umra, Hisar

शोध-आलेख सार:- *हिन्दी लेखिका मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व बहुत ही शर्मीला और अंतर्मुखी माना जाता है। किसी भी लेखक की रचना प्रक्रिया युगीन परिस्थितियों तथा वातावरण से प्रभावित होती है। लेखक जो कुछ वातावरण में घट रहा होता है, उसी को अपने साहित्य में उतारता है तो मृदुला गर्ग ने भी अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्ति की है।*

मृदुला गर्ग नए युग की लेखिका हैं उन्होंने अपने साहित्य लेखन से समाज को एक नई दिशा दी। उनका लेखन प्रमुख रूप से समाज के रीति-रिवाजों में घिरी स्त्रियों की समस्याओं पर आधारित है। उन्होंने महसूस किया कि हमारे समाज में स्त्रियां भिन्न-भिन्न प्रकार की पीड़ाओं से, संघर्षों से जूझ रही है। मृदुला गर्ग का लेखन साहित्य ऐसी ही स्त्रियों की दास्ता बंया करता हैं। मृदुला जी आज जिस मुकाम पर है उसे पाने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ा।

डॉ. तारा अग्रवाल उनके व्यक्तित्व के बारे में कहती है- ''एक लेखिका के रूप में अपने को स्थापित करने के लिए उन्हें काफी संघर्ष करना पड़ता है। मृदुला गर्ग के लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में उनके परिवार की भूमिका तथा परिवेशगत सरकार प्रमुख रहे है।''1

मुख्य शब्द - मुकाम, व़ारीयता, अस्मिता, प्रस्फुटित

---------------------------------X---------------------------------

मृदुला गर्ग आधुनिक युग की महानतम लेखिकाओं में से है। उन्होंने उपन्यास व कहानियों के अलावा निबंध, नाटक, संस्मरण भी लिखें। परन्तु उन्होंने मूल रूप से उपन्यास को ही अधिक व़ारीयता दी है। क्योंकि उनका कहना है कि उपन्यास में हम अपनी बात को पूर्ण रूप से स्पष्ट कर सकते है -

''उपन्यास को मैंने प्राथमिकता दी, क्योंकि जो मैं कहना चाहती थी वह कहानी में सीमित नहीं कर पाती थी। कहानी में मैंने क्षण को पकड़ा है और उपन्यास में जीवन की विस्तीर्णता को। थीम को लेने के पश्चात् मुझे लगता है कि मैं उसको कहानी में पूरा नहीं कर पा रही हूँ, इसलिए उपन्यास को ही प्राथमिकता देती हूँ।''2

मृदुला जी हमेशा से ही बच्चों व महिलाओं की सेवा के प्रति सचेत रही है। उन्होंने जब महिलाओं पर हो रहे भेदभाव, अन्याय को देखा तो उन्होंने अपने विद्रोह को लेखन के माध्यम से प्रकट किया। वे स्वयं यह बात स्वीकारती है- ''किसी भी मूल्य या स्थिति को मैं केवल स्वीकार नहीं कर पाती क्योंकि वह है और सर्वमान्य है, होती आयी है और सुरक्षा प्रदान करती है। अपने चारो तरफ घटते अन्याय को देखकर मैं शांत स्थिर नहीं रह पाती अनास्था और असंतोष से पनपा रोष उफपने लगता है।''3

मृदुला गर्ग ने अपनी रचना के विषय में प्रेम, सेक्स, अस्तित्व, क्षण को चुना है। उनका मानना है कि प्रेम से बढ़कर कुछ नहीं है और इसी प्रेम के माध्यम से उन्होंने अपने साहित्य में स्त्री-अस्मिता की तलाश करने की कोशिश की।

''प्रेम और काम इन दो शाश्वत सत्यों के आसपास ही उनका वैचारिक चितंन प्रस्फुटित पल्लिवत हुआ। प्रेमहीन सेक्स और सेक्सहीन प्रेम दोनों ही मनुष्य जीवन का अतिचार हैं, क्योंकि दोनो और ही प्राकृतिक संवेगों का निराधार हो जाता है। परंतु मृदुला गग्र का लेखन स्त्री पुरूष के संबंधो की धुंधासी उब से पृथक हटकर एक अस्मिता की अर्थपूर्ण तलाश है।''4

मृद्ला गर्ग के उपन्यास कुछ अलग और नया ही लेकर आते है। उनका प्रसिद्ध उपन्यास 'चितकोबरा' विवाहित स्त्री के द्वंद्व,

www.ignited.in

भावनात्मक टकराहट को और उसके निर्माण न लेने की स्थिति को दर्शाता है। मनीषा और मन् दोनो की स्थितियों पर लेखिका कहती है।

"मानसिक अंतद्र्वद्व या असमजंस की स्थिति से छुटकारा पाया हुआ पात्र मेरे लिए दिलचस्पी का विषय नहीं रहता वैसे भी हमारा समाज जिस तरह की सक्रमंण की स्थिति में है। उसमें इस तरह की मानसिक दुविधा से मुक्त पात्र योटोपियन ही हो सकते है। मेरे लिए यूं भी दिलचस्पी का विषय यात्रा है पड़ाव नहीं। यात्रा किए बगैर ही "तीसरा क्षितिज" मिल गया तो लिखने को क्या बचा?"5

"चितकोबरा" उपन्यास मृदुला जी का बहुत ही प्रसिद्ध उपन्यास है। इसमें शादीशुदा औरत की कथा कही गई। इस उपन्यास में खुले शब्दों में औरत की सैक्स से संबंधी इच्छाएँ बताई गई लेकिन समाज ने इसका विरोध किया। इस उपन्यास को जनता ने अश्लील कहा। यहाँ तक कि उन पर मुकद्दमा भी चलाया गया। पर इन सब बातों का उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। उनका लक्ष्य था स्त्री को स्वयं अपना अस्तित्व खोजने के काबिल बने। लोगों ने सोचा शायद अब वो अश्लीलता पर नहीं लिखेगी। परंतु मृदुला जी ने अपना काम जारी रखा। वे अपने लेखन के जरिये समाज की यथार्थ तस्वीर दुनिया को दिखाना चाहती थी। इस प्रकार उनके उपन्यास "कठगुलाब" में भी उन्होंने वर्तमान स्त्री के संघर्ष और उनकी इच्छाओं को अभिव्यक्ति दी है। यह उपन्यास पुरूष के द्वारा किए जा रहे शोषण, दमन बलात्कार का बोल-बाला चित्रण है।

मृदुला गर्ग ने अपने लगभग सभी उपन्यासों में स्त्री को ही महत्व दिया है। क्योंकि वर्तमान में भी नारी अपनी इच्छा से कार्य नहीं कर सकती। उसे पुरूष से अब भी कम आंका जाता है। अब भी स्त्री अपना जीवन साथी नहीं चुन सकती। इसलिए मृदुला गर्ग जी चाहती है कि उनकी स्त्री चाहे नौकरी पेशा हो या घरेलू, आशिक्षित हो या अनपढ़ पर हो वो स्वावलंबी। उसे अपने अस्तित्व के प्रति सचेत रहना होगा।

मृदुला गर्ग ने अपने उपन्यासों में प्रेम संबंधी विचार भी प्रकट किए है। प्राचीन समय में प्रेम पर केवल पुरूष का वर्चस्व था परंतु समय परिवर्तन ने स्त्रियों को भी ये अधिकार दिया। मृदुला जी का अपना मत प्रेम की प्रति इस प्रकार है, - "जीवन को उसके समग्र और उदास रूप में जानने-पहचानने के लिए प्रेम से अधिक उपयुक्त माध्यम नहीं मिल सकता। जो लोग प्रेम के कथ्य को मात्र स्त्री-पुरूष संबंध तक सीमित कर लेते है, वे साहित्य के प्रति और जीवन के प्रति भी अन्याय करते हैं।"6

मृदुला गर्ग का मानना है कि हमारा समाज विषमता पर आधारित हैं। इनका मानना है कि भारतीय संस्कृति व्यक्तिवादी है। यह विषमता और व्यक्तिवादिता ही पूंजीवाद व्यवस्था को जन्म देती है। "जाति व वर्ग विभाजित हमारे समाज में केवल समूहों के बीच भाषण और पूंजीभूत विषमता नहीं है, स्त्री और पुरूष के बीच भी गहरी असमानता है। बल्कि, अन्यास की एक समुचित, सुनियोजिस व्यवस्था है।"7

भारतीय संस्कृति में मनुष्य शरीर को नश्वर कहा गया है ताकि मनुष्य अपने को केवल शरीर में सीमित न रखकर अपना व्यक्तित्व पहचानें। परंतु चिंता का विषय यह है कि नारी का सदा से ही "देह" माना गया है। उसे केवल देह को रूप में ही मान्यता मिली व्यक्तिगत पहचान नहीं। प्राचीन काल से ही स्त्री का देह के रूप में शोषण होता आ रहा है। अब स्त्री इस देह के दायरे से निकलकर अपनी पहचान चाहती है। जो स्त्री नैतिकता, समाज की मान्यताएँ, सैक्स का पालन करती है वही गुणगान मानी जाती है लेकिन जो इनका पालन नहीं करती वह चरित्रहीन, कुल्टा कही गई। मृदुला जी ने ऐसी नैतिकता के प्रतिमानो का विरोध करके स्त्री को पहचान देने का प्रयत्न किया। इस विषय में मृदुला गर्ग का मत है कि,

"बहुत बार होता यह है कि स्वतंत्रता के बहाने या आधुनिकता के बहाने एक नई प्रकार की पराधीनता स्त्री पर थोप दी जाती है और आज के लेखन में देह की स्वतंत्रता पर जो अतिशय आग्रह है वो मुझे लगता है, ऐसी ही पराधीनता का कारण बन सकता है।"8

मृदुला गर्ग जी एक श्रेष्ठ लेखिका है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्रियों को आत्मनिर्भर स्वावलंबी बनने की प्रेरणा दी है। उनका मानना है कि स्त्री को कदाचित यह नहीं सोचना चाहिए कि वह स्त्री है जो लाचार व कमजोर है।

कठगुलाब में मरियान का कथन, "अपने को कमतर मानने वाली औरतें मर्द होना चाहती है।"9

मृदुला जी ने स्त्रियों को बलात्कार होने पर स्त्री को अपराध बोध से मुक्त रहने की प्रेरणा दी है। उसे प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष करते रहना चाहिए। वर्तमान समाज में बलात्कार जैसी समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इस घटना से आहत होकर स्त्री आत्महत्या जैसा घिनौना कार्य करने के लिए तत्पर हो जाती है। परन्तु मृदुला गर्ग अपने उपन्यास "कठगुलाब" की पात्र स्मिता जो बलात्कार की शिकार हुई, उसके माध्यम से अपने भाव बतलाती है।

www.ignited.in

"सूरजमुखी अंधेर के" या इंसाफ को तराज की नायिका की तरह, मैं खुद को दूषित पानी क्यों नही मानती? खुदकुशी करने का मेरा जमीन मुझे नहीं उकसाता? मेरा मन मुझे धिक्कारता था तो सिर्फ इसलिए कि मैंने प्रतिशोध नहीं लिया। भगौड़ो की तरह पलायन क्यों किया? पर क्या एक बेहतर जिदंगी जीने का ख्याल देखना बुजदिली है।"10

मृदुला जी का लेखन स्त्रियों के पहचान दिलाने को समर्पित है। हालांकि कुछ लोगों ने अश्लील कहकर इनके लेखन को नकारा परंतु इस महान लेखिका ने इन बातों की परवाह नहीं की। वे जीवन से संघर्ष करती हुई बेपरवाह होकर स्त्रियों के हित में लिखती है और लिखती रहेगी।

संदर्भ सूची -

1. डॉ. तारा अग्रवाल, मृदुला गर्ग का कथा साहित्य, पृ0 13
2. उपरोक्त, पृ0 30
3. कृष्णा तँवर, स्त्री विमर्श वैचारिक संस्कार और मृदुला गर्ग के उपन्यास, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 76
4. विनेश द्विवेदी, पुनश्च, अंक 15, पृ0 3
5. सारिका, अक्टूबर (16 से 31) साक्षात्कार-दिनेश द्विवेदी से लेखिका की अंतरंग बातचीत, पृ0 47
6. मृदुला गर्ग, चितकोबरा, भूमिका पृ0 6
7. मृदुला गर्ग, चुकते नहीं सवाल, "सत्ता और स्त्री' लेख, पृ0 69-70
8. मृदुला गर्ग, देह कभी आजाद हो ही नहीं सकती, लेख, पुनश्च, जून 2004, पृ0 236
9. कृष्ण तंवर, स्त्री विमर्शः वैचारिक सरोकार और मृदुला गर्ग के उपन्यास, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 31
10. मृदुला गर्ग, कठगुलाब, पृ0 32

Corresponding Author

Seema*

M.A. B. Ed. Lecturer of Hindi, Singh Ram Memorial Senior Secondary School, Umra, Hisar

raninakkar89@gmail.com